से. कठिन परीक्षा की घड़ी में भी स्वार्थ एवं अवसरवादिता को छोड़कर पक्षहित एवं राष्ट्रहित के लिए संघर्षशील बने रहना, यह संदेश इस अमृत महोत्सव ग्रंथ के माध्यम से हम दे रहे हैं. क्योंकि सेवा, संगठन, संरचना एवं संघर्ष के साथ साथ लोकतंत्र में विश्वास, उत्तरदायी जनप्रतिनिधित्व, सत्ता एवं संगठन के प्रति अपना उत्तरदायित्व, ऐसे अनेक विषयों पर इस ग्रंथ में समाहित लेख के लेखकों ने प्रकाश डाला है. वरिष्ठ नेतागण से लेकर छोटे छोटे मोहल्ले के कार्यकर्ताओं तक, उद्योगपतियों से लेकर रिक्शाचालकों तक, टावरों में रहनेवाले श्रीमंतों से लेकर झुग्गी-झोपडपट्टीवासियों तक, हर तबके के लोगों ने जाति, भाषा, धर्म के आधार पर भेदभाव न करते हुए, केवल मानवता को ही धर्म माननेवाले रामभाऊ के व्यक्तित्व का विराट दर्शन, इस ग्रंथ द्वारा हमें करवाया है.

यह एक ऐसे राजनेता की यशोगाथा है, जो एकदम अकेला, अनजान मुंबई में आया था. और जिस समय वह इस महानगर मुंबई में आया, उसके हाथ में एक व्यक्ति के लिए केवल एक परिचय-पत्र था... वही राम नाईक, जिसे मुंबई में कोई नहीं जानता था. वह अपने पुरुषार्थ से बढ़ते-बढ़ते मुंबई की बुलंद आवाज बन गया और आज मुंबई में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा, जो राम नाईक को न जानता हो. यह रामभाऊ जैसे कर्तृत्ववान व्यक्ति का पराक्रम है और लोकतंत्र की सफलता है. रामभाऊ सिर्फ अपने कर्म को ही निरंतर करते जाने में विश्वास करते हैं. रामभाऊ के जीवन मंथन से प्रकट यह ग्रंथ रूपी अमृतकुंभ, हम समाज को अर्पित कर रहे हैं.

इस ग्रंथ के लिए वरिष्ठ से वरिष्ठतम नेतागण एवं संघनिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ साथ अन्यान्य क्षेत्रों और पार्टियों के कई प्रबुद्ध लोगों ने, कलाकारों ने, पत्रकारों ने अपने अपने विचार प्रकट किये हैं और साथ ही साथ यादगार और दुर्लभ छायाचित्र हमें उपलब्ध करवाये हैं. इन सभी को लगता है कि हर प्रकार की समस्या से जूझनेवाले, संघर्षों से मुंह न मोड़नेवाले और कर्म में सदा लगे रहनेवाले, हम सबके प्रिय - राम नाईक जी सही अर्थों में `कर्मयोद्धा' हैं.

मैं रामभाऊ से स्नेह रखनेवालों की एवं अमृत महोत्सव समिति की हृदय से ऋणी हूँ. साथ ही सभी सहयोगियों को भी विशेष धन्यवाद देती हूँ.

जयवंती महेता

(जयवंतीबेन महेता)
अध्यक्ष
राम नाईक अमृत महोत्सव समिति